'ग्रन्थिबन्धनम्' महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

CHAUDHARY CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की पीएच०डी०(संस्कृत)

उपाधि हेतु

शोधप्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

Poonam Lakhanpal

शोध निर्देशिका

प्रो० पूनम लखनपाल

प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, संस्कृत विभाग

रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ

Anika Gola

शोधच्छात्रा

अनिका गोला

शोध केन्द्र

रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

Scanned with OKEN Scanner

"ग्रन्थिबन्धनम्" महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

विषय प्रस्तुति एवं प्रयोजन

महाकवि वाल्मीकि की हार्दिक करुणा से उत्पन्न अनुष्टुप् छन्द के आविर्भाव से प्रारम्भ लौकिक संस्कृत के आदिकाव्य रामायण की रचना हुई । कुरुवंश के इतिहास एवं श्रीमद्भगवद्गीता को समाहित किए हुए "महाभारत" की गणना भी आर्षकाव्य के अन्तर्गत होती हैं । इस प्रकार संस्कृत में महाकाव्यों का निर्माण प्राचीनकाल से होता आ रहा है । प्राचीन साहित्यकारों की भाँति अद्यतन महाकाव्यों का लेखन हो रहा है । प्राचीन साहित्यकारों से प्रेरणा प्राप्त आधुनिक साहित्यकार निरन्तर ग्रन्थों के लेखन में प्रयासरत है । 20वीं शती से संस्कृत महाकाव्य का स्वर्णयुग माना गया है । आज 21वीं शती में आधुनिक महाकाव्य के लेखन के क्षेत्र में डॉ० रामकरण शर्मा, डॉ० इच्छाराम द्विवेदी, डॉ० हरिनारायण दीक्षित, डॉ० द्विवेन्द्रनाथ शास्त्री, डॉ० मेधाव्रत शास्त्री, डॉ० गोस्वामी बलभद्र प्रसाद, अभिराजराजेन्द्र मिश्र, डॉ० निरञ्जन मिश्र आदि नाम प्रसिद्ध है ।

आधुनिक संस्कृत जगत् में डॉ० निरञ्जन मिश्र एक विख्यात साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध है । निरञ्जन मिश्र अद्भुत व्यक्तित्त्व एवं विलक्षण प्रतिभा के साहित्यकार हैं । इनका जन्म 2 जनवरी 1966 में को बिहार के भ्रमरपुर गॉव में हुआ था । इनके पिता का नाम पण्डित

Anuska Gola

सुखदेव मिश्र तथा माता का नाम भवानी देवी था । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भ्रमरपुर गाँव में ही हुई थी । इन्होंने भ्रमरपुर गाँव में स्थित दुर्गा संस्कृत उच्च विद्यालय से सन् 1981 ई० में मध्यमा की शिक्षा प्राप्त की । राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, भागलपुर से सन् 1983 में उपशास्त्री शिक्षा का अध्ययन किया । दरभंगा के लगमा स्थित आदर्श संस्कृत महाविद्यालय से सन् 1986 ई० में शास्त्री तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से सन् 1988 ई० में आचार्य तथा 1990 ई० में पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त की । इन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय से सन् 1992 ई० में एम० ए० की डिग्री प्राप्त की ।

निरञ्जन मिश्र वर्तमान में हरिद्वार में स्थित श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है । मिश्र जी की कृतियों को अनेक साहित्यिक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं । निरञ्जन मिश्र वर्तमान में भी निरन्तर रूप से लेखन कार्य में संलग्न है । अभी तक इनके द्वारा रचित लगभग पन्द्रह रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं । जिनमें महाकाव्य, लघुकाव्य, गीतिकाव्य, मुक्तककाव्य एवं गद्यकाव्य आदि सम्मिलित हैं ।

"ग्रन्थिबन्धनम्" सोलह सर्गों में बद्ध महाकाव्य है, जो कि दहेज प्रथा पर आधारित महाकाव्य है । इसकी नायिका सुकन्या तथा नायक शुभङ्कर है । शुभङ्कर का मित्र निखट्टू

Jm.

Anuka Gola

Scanned with OKEN Scanner

सहनायक हैं। इसमें एक शुक नायक और नायिका के बीच प्रेम का अङ्कुरण और पल्लवन कराता है । दोनों का विवाह निश्चित हो जाता है, परन्तु दहेज के कारण विवाद हो जाता है ।

निरञ्जन मिश्र ने इस महाकाव्य के माध्यम से समाज का अङ्ग बन चुकी दहेज की कुप्रथा के प्रति युवाओं को जागरूक करने का प्रयत्न किया है । इसी कारण से इस ग्रन्थ ने मुझे शोध करने के लिए आकर्षित किया । कुप्रथा दहेज के कारण युवतियों के शोषण एवं उनके परिवार की हताशा से द्रवित हृदय ने मुझे इस ग्रन्थ पर शोध हेतु प्रेरित किया । वर्तमान की समस्या के प्रति आधुनिक कवि का दृष्टिकोण जानने तथा साम्प्रतिक नारी के उत्थान की दृष्टि से इस ग्रन्थ पर शोधकार्य उपयोगी होगा, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है । उसमें अन्तर्निहित अज्ञातमूलभूत तत्त्वों को प्रकाश में लाना साहित्य शोध का मुख्य उद्देश्य होता है । निरञ्जन मिश्र का यह महाकाव्य वर्तमान में सामाजिक मुद्दों, रूढियों, कुप्रथाओं तथा सामाजिक शोषण के विरुद्ध जनमानस की आवाज है । समाज में प्रचलित, सामाजिक रूप से अनुपयोगी रूढियों एवं परम्पराओं को सम्मुख लाना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है ।

शोध कार्य में प्रविधि वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक पद्धतियों का आवश्यकता के अनुसार प्रयोग किया जाएगा ।

Anuka. Gola

'डॉ० निरञ्जन मिश्र की कृतियों में युगबोध' – दयालबाग विश्वविद्यालय आगरा से, 'ग्रन्थिबन्धनम् का व्याकरण की दृष्टि से अध्ययन' चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से पञ्जीकृत हैं।

किन्तु मेरा विषय इनसे पृथक् भिन्न रूप से कव्यशास्त्रीय दृष्टि से ग्रन्थ की समीक्षा प्रस्तुत करेगा ऐसा मेरा विश्वास है । परिणाम तो गहन अध्ययन द्वारा साध्य है और उसमें सुधीजन की धीनिकषा ही प्रमाण होगी ।

Yin.

Aneeka Gola

Scanned with OKEN Scanner

"ग्रन्थिबन्धनम्" महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

रूपरेखा

प्रथम अध्याय – कवि परिचय

1. व्यक्तित्व
2. कर्तृत्व

द्वितीय अध्याय – महाकाव्यत्व विमर्श

1. महाकाव्य के पारम्परिक लक्षण
2. महाकाव्य के आधुनिक लक्षण
3. ग्रन्थिबन्धनम् का महाकाव्यत्व परीक्षण

तृतीय अध्याय – कथावस्तु विमर्श

स्रोत एवं मौलिकता

चतुर्थ अध्याय – पात्र विमर्श

1. प्रधान पात्र
2. गौण पात्र

पञ्चम अध्याय – भाषा शैली विमर्श

1. भाषा विमर्श
2. शैली विमर्श
3. अलंकार विमर्श
4. छन्द विमर्श

षष्ठ अध्याय – काव्य सौन्दर्य विमर्श

1. रस विमर्श
2. गुण विमर्श
3. दोष विमर्श

उपसंहार – उपलब्धि एवं निष्कर्ष

Yes.

Anuka Gole

Scanned with OKEN Scanner

सहायक ग्रन्थ सूची

1. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य – श्रीधरभास्कर वर्णेकर
2. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास – हीरालाल शुक्ल, रामजी उपाध्याय
3. ग्रन्थिबन्धन महाकाव्य – डॉ० निरञ्जन मिश्र
4. भारतीय साहित्य शास्त्र कोष – राजवंशसहाय हीरा
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गौरेला
7. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास – कृष्ण चौतन्य
8. संस्कृत साहित्य बीसवीं शतीं – राधावल्लभ त्रिपाठी

Anuka Gola

Scanned with OKEN Scanner